ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

दलित समाज का दस्तावेज : 'नाच्यौ बहुत गोपाल'

डा0 सविता कुमारी श्रीवास्तव

शोध–पत्र सारांश

अमृतलाल नागर हिन्दी कथा साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके उपन्यासों में गहरी संवेदना के भाव निहित हैं। उसमें स्पन्दन, पीड़ा, कसक और वेदना की तीव्र अनुभूति है। नागर जी के कथा–सागर में आज के जीवन का पूरा चित्र उपस्थित होता है। इनके यहाँ जीवन का असंतुलन, आर्थिक वैषम्य, शोषण की प्रक्रिया, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता, स्त्री तथा दलित विमर्श आदि परिलक्षित होता है।

'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास अमृतलाल नागर जी के महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है। मुख्य रूप से इस उपन्यास में नागर जी ने साक्षात्कार पद्धति के माध्यम से डायरी विधा का पुट देते हुए औपन्यासिक शैली में कथा को स्वरूप प्रदान किया है। निर्गुनियाँ नामक एक स्त्री पात्र का पूरा जीवन इस उपन्यास का केन्द्र बिन्दु है। इसमें अत्याचारों से पीड़ित एक नारी की व्यथा व संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है जिसका जिम्मेदार हमारा खोखला समाज है। उपन्यास में चित्रित नारी पात्र ने नारी एवं दलित वर्ग के दंश को जिस प्रकार झेला है वह समाज के यथार्थ स्वरूप को व्यंजित करती है। वर्ग, जाति, वर्ण–व्यवस्था में बंग समाज एवं प्राचीन प्रचलित रूढ़ियाँ सब पर नागर जी ने अपनी लेखनी से प्रहार किया है। इन सभी दृष्टियों से नागर जी का यह उपन्यास एक महत्वपूर्ण उपन्यास के रूप में जाना जाता है।

अमृतलाल नागर हिन्दी कथा साहित्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके लेखन में व्यष्टि और समष्टि दोनों को समायोजित करने की क्षमता है। उनकी दृष्टि सामाजिक अस्मिता के सन्दर्भ में आलोकित होती है। नागर जी के विचारधारा में आधुनिकता का बोध है। साहित्य के सन्दर्भ में यह माना जाता है कि जो साहित्य सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करता है वह आधुनिक है। इस दृष्टि से अमृतलाल नागर जी के उपन्यास साहित्य सही अर्थों में आधुनिक हैं। नागर जी प्रेमचन्द की परम्परा की कड़ी हैं। उनके कथा साहित्य में प्रेमचन्द जी के समान व्यापक दृष्टि को गहरे संवेदनात्मक भाव से व्यक्त करता है। जिसमें स्पन्दन है, पीड़ा है, कसक है और वेदना की तीव्र अनुभूति है। नागर जी के कथा–संसार में आज के जीवन का पूरा चित्र उपस्थित होता है। इनके यहाँ जीवन का असंतुलन, आर्थिक वैषम्य, शोषण की प्रक्रिया, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता, स्त्री तथा दलित विमर्श आदि परिलक्षित होता है।

नागर जी ने अपने उपन्यासों और कहानियों में समाज के मध्यवर्ग की पीड़ा, विवशता, संघर्ष, अंतर्द्वन्द्व, आर्थिक विषमता, रहन–सहन, बोलचाल, रीति–रिवाज इत्यादि के साथ ही भारतीय जन–जीवन और समाज की व्यवस्था, सांप्रदायिकता, छात्र–आंदोलन, नारी जागरण और अस्पृश्यता के पक्षों पर एक समाजशास्त्रीय दृष्टि से विवेचन और विचार किया है। साहित्य में उपन्यास सामाजिक अनुभूतियों के छोटे–छोटे टुकड़ों का समन्वित रूप है। जीवन के अतीत, वर्तमान और भविष्य की आशाओं को को स्वरूप प्रदान करने

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

के कारण उपन्यास गद्य–साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। नागर जी ने अपने उपन्यासों में जो दृष्टि दी है वह अन्य कथाकारों से अलग है। इस पर डा0 सुदेश बत्रा ने लिखा है – ''अमृतलाल नागर एक प्रतिभाशाली और प्रबुद्ध सर्जक हैं। फलतः उनकी कृतियों में करवट बदलते और सिसकते भारत के समाज, इतिहास और संस्कृति की तस्वीरें उजागर होती चली गयी हैं। कथ्य की सजगता, शिल्प की नवीनता और अनुभव की प्रौढ़ता ने उन्हें जीवन के बारीक से बारीक रेशों को पकड़ने की गहरी अन्तर्दृष्टि दी है।''1

नागर जी के कथा–साहित्य में समाज–संस्कृति, इतिहास–दर्शन और मानव–जीवन के अनेक पहलू समाहित हैं। नागर जी के उपन्यास सामाजिक संदर्भों में जीवन का एकदम नवीन रूप प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं। यह मौलिकता उनके उपन्यासों की विशेषता प्रकट करती है एवं एक चर्चित उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित करती है। उन्होंने 1946 में अपना प्रथम उपन्यास 'महाकाल' लिखा था तथा जीवन पर्यन्त वे उपन्यास–सृजन में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने छोटे–बड़े पन्द्रह उपन्यासों की रचना की है। 'बूँद और समुद्र', 'सुहाग के नूपुर', 'अमृत और विष', 'मानस के हंस' और 'नाच्यौ बहुत गोपाल' तो उनकी प्रसिद्ध के स्थायी स्तम्भ है। इसके अतिरिक्त सेठ बांकेमल, शतरंज के मोहरे, सात घूँघट वाला मुखड़ा, एकदा–नैमिषारण्ये, खंजय–नयन, बिखरे तिनके, अग्निवर्षा, करवट और पीढ़ियाँ उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। अलग–अलग संदर्भों को लेकर लिखे गये उनके उपन्यास जीवन की सन्निकटता को व्याख्यायित करने में सहायक हैं।

''नाच्यों बहुत गोपाल' उपन्यास अमृतलाल नागर जी के महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है। मुख्य रूप से इस उपन्यास में नागर जी ने साक्षात्कार पद्धति के माध्यम से डायरी विधा का पुट देते हुए औपन्यासिक शैली में कथा को स्वरूप प्रदान किया है। उपन्यास की कथा में वर्णनात्मकता की प्रधानता है। यही इस उपन्यास की विशेषता है। मुख्यतः यह नागर जी की सशक्त रचना है। यह उपन्यास सामाजिक, साहित्यिक एवं आधुनिकता तीनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सामाजिक दृष्टि से यदि इसका आकलन किया जाये तो इसमे समाज के एक ऐसे उपेक्षित वर्ग की कथा कही गयी हे जिसे आज भी समाज तुच्छ एवं अछूत की श्रेणी में रखता है। वह है 'मेहतर' जाति का उपेक्षित अछूत एवं दलित समाज जो आज भी अपने सर पर लोगों का मैला ढोते हैं एवं अत्यंत निम्न श्रेणी में गिने जाते हैं। आधुनिकता की दृष्टि से कहानी की संरचनात्मक पद्धति है जिसमें नागर जी ने मेहतर जाति की व्यथा, अत्याचार, उपेक्षित जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

भारतीय वर्ण व्यवस्था के आधार पर इस उपन्यास का सृजन कार्य हिन्दी साहित्य जगत की एक बड़ी उपलब्धि है। डा0 हेमराज कौशिक के मतानुसार, ''यह उपन्यास समाज के गर्हित कहे जाने वाले वर्ग मेहतर जाति और सवर्णों के इर्द–गिर्द बंधी हुई मोटी जकड़बंदी और उस दीवार के दोनों छोरों पर अपने–अपने पाले हुए अहं तथ मिथ्याडम्बरों का सजीव आलेख है।''2 नागर जी ने इस उपन्यास में एक साथ कई चीजों को सामने रखा है एवं उसका खंडन करने का पूरा प्रयास किया है। वर्ग, जाति, वर्ण–व्यवस्था में बंटा समाज एवं प्राचीन प्रचलित रूढ़ियाँ सब पर नागर जी ने अपने

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

लेखनी से प्रहार किया है, क्योंकि ये समाज को खोखला बना देती है। वे उपन्यास में स्वयं लिखते हैं, ''एक तो हम समझते हैं कि यह तथाकथित नीच जातियाँ नितान्त चरित्र शून्य होती हैं और दूसरी हमारी धारणा यह बनती है कि इन्हें केवल हमारी सहानुभूति तथा दया ही चाहिये। मैं समझता हूँ यह दोनों बातें गलत हैं। यह हमसे केवल न्याय चाहते हैं।''3

नागर जी का यह उपन्यास अत्याचारों से पीड़ित एक नारी की व्यथा संघर्ष को प्रस्तुत करता है जिसका जिम्मेदार हमारा खोखला समाज है। उपन्यास में चित्रित नारी पात्र ने नारी एवं दलित वर्ग के दंश को जिस प्रकार झेला है वह समाज के यथार्थ स्वरूप को व्यंजित करता है। हमारा समाज केवल दिखावा करता है वास्तव में तो उसमें यह दम ही नहीं है कि वह दलित के साथ खड़ा हो सके। लेखक में ही यह कई बार व्यक्त हुआ है क्योंकि समाज के समक्ष निम्न जाति वर्ग का सत्य उजागर करने की चाह तो उनमें है परन्तु कहीं न कहीं वे सत्य से परे भी हटना चाहते हैं। ऐसा उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के बीच का भेद है जो उनके अन्तर्मन से स्पष्ट हुआ है। फिर भी लेखक ने पात्र के साथ न्याय करने का पूरा प्रयास किया है।

निर्गुनियाँ नामक एक स्त्री पात्र का पूरा जीवन इस उपन्यास का केन्द्र बिन्दु है। इस उपन्यास की संरचना में नागर जी ने लेखक पत्रकार अंशुधर शर्मा के माध्यम से मेहतर वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली पात्र निर्गुनियाँ का इन्टरव्यू लिया है। अतः इन्टरव्यू, डायरी एवं वर्णनात्मक पद्धति के सहारे से कथा आगे बढ़ती है, जिसमें निर्गुनियाँ के वर्तमान एवं अतीत जीवन के संघर्ष व्यथा को स्वरूप प्रदान किया गया है। उन्होंने एक ही नारी को जिंदगी के कई मोड़ों पर गुजरते हुए प्रस्तुत किया है। नागर जी ने इस उपन्यास के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से सवर्ण नहीं होता। जो इस बात पर (सवर्ण होने की बात पर) गर्व करते हैं, हो सकता है कि उनके समक्ष कोई ऐसी विवशता आ जाए जो उन्हें नीच वर्ण अपनाने के लिए विवश कर दे, जिस प्रकार की विवशता ''नाच्यौ बहुत गोपाल'' की नायिका के सम्मुख आई। जन्म से सवर्ण होते हुए भी उसे मेहतर जैसे घृणामय वर्ण को अपनाना पड़ा। डॉ0 सुदेश बत्रा के शब्दों में, ''नागर जी ने ''निर्गुण'' के ब्राहम्णत्व संस्कारों को जलाकर मेहतरानी बनने के अन्तर्द्वन्द्वों को पूरी ईमानदारी और सच्चाई तथा मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।''4

'नाच्यौ बहुत गोपाल'' की पूरी कथा निर्गुनियाँ के इर्द–गिर्द घूमती है। निर्गुनियाँ वर्ण एवं संस्कारों से ब्राहम्ण है। बाल्यावस्था में ही मातृविहीन हो जाने के कारण निर्गुनियाँ का बचपन नाना–नानी के आदर्शों, संस्कारों एवं धार्मिक विचारों के बीच व्यतीत हुआ। नाना–नानी के मृत्युपरांत उसके पिता ने उसे अपने मालिक पंडित बटुक प्रसाद के हाथों सुपुर्द कर दिया। अतः पारिवारिक विडम्बना के कारण उसकी परवरिश बड़ी ही दुश्वारियों व विसंगतियों के मध्य होती है। बड़े होने पर उसका विवाह बड़े उम्र के एक अधेड़ पुरुष मसुरियादीन के साथ करा दिया जाता है। इस विवाह से निर्गुनियाँ अत्यंत दुःखी रहती है। पति द्वारा यौन तृप्ति न पाकर वह घर में आने वाले मेहतर 'मोहना' के साथ भाग जाती है जो उसे मेहतरानी बनाकर स्वयं डाकू बन जाता है। नागर जी ने एक नारी के जीवन संघर्ष को सूक्षमता और गहराई से चित्रित किया हैं। नारी की पीड़ा

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

निर्गुनियाँ द्वारा मार्मिक शब्दों में व्यक्त हुई है – ''औरत से बढ़कर कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब एक है, साँसें सब एक है, सब जगह औरत की एक जैसी ही मिट्टी पलीत होती है, मैंने दलितों की समस्या को दोहरे ढंग से भोगा है।''5 निर्गुनियाँ के माध्यम से नागर जी ने ब्राह्मण जाति पर कटाक्ष किया है। दिशा–निर्देश है कि ब्राह्मण वर्ग धर्म एवं कर्म के आड़ में बड़े–बड़े कांड करने से पीछे नहीं हटते हैं। उपन्यास की यह पंक्तियाँ निर्गुनियाँ के हृदय के भावों को खोल कर सामने रख देती है, ''एहं–भाड़ में गई ऐसी बम्हनई। वो भी बाम्हनी ही है जिसने जवानी भर मेरे बाप को चूसा और बुढ़ापे में भी हवस नहीं बुझी तो मेरे नाम से बसन्तू बाबू को मास्टर बनाया। उनकी तबियत मुझ पर आ गई तो मेरी रिसवत देके अपना काम चलाने लगी। फिर पेट गिराने की नौबत आई तो डर के मारे अपने पुराने यार इस बूढ़े बन्दर को ब्याह दिया। ... यह सब लोग क्या ब्राह्मण कहलाने लायक हैं? ब्राह्मण थे मेरे नाना–नानी।''6 .... यहाँ पर ब्राह्मण समाज पर तीखा व्यंग्य है।

'नाच्यौ बहुत गोपाल' में नागर जी ने संघर्षरत व व्यथित निर्गुनियाँ का नारी रूप चित्रित किया है जिसमें संस्कार ब्राह्मण के हैं परन्तु अपनी विवशता के कारण वह मेहतरानी बनी है। काम एवं प्रेम के वशीभूत होकर निर्गुनियाँ मोहना मेहतर के साथ अपना सबकुछ त्यागकर साथ चल देती है परन्तु मोहना के द्वादा धर्म परिवर्तन की बात को लेकर वह पश्चाताप की अग्नि में जलने लगी थी। उसके आत्मबोध उसे एहसास करा रहे थे कि वह तो कहीं की नहीं रही, ''बचपन में नाना से सुना था, गीता में भी यही लिखा है कि स्वधर्म में मौत भी भली लगती है, लेकिन पराया धर्म भयावना होता है। तमाचा खाने का–सा अनुभव हुआ। यदि यह अपना धर्म छोड़ने के लिये राजी नहीं तो मैं ही क्यों छोडू.....। पर मेरा धर्म अब रहा ही कहाँ? बात का ध्यान आते ही निगुर्ण का कलेजा भीतर से चाक–चाक हो गया। ..... निर्गुण का वह दूसरा बेहोश मन मितना टूट चुका है। बैठे–बैठे निर्गुण का मन पश्चाताप की घुटन से भर–भर गया। कल तक वह ईश्वर को दोषी ठहराती थी, सारे जहान को दोष देती थी। कल तक वह सत्य था, लेकिन आज उसका समूचा अस्तित्व ही झूठा हो चुका था। वह स्पष्ट रूप से स्वयं अपनी ही नजरों में गिर चुकी थी। चार दिनों के बाद पहली बार उसके मन ने अपने ही सामने यह कहा : 'हाय! यह मैंने क्या कर डाला?''7

निर्गुण के मन में संस्कारों और इस गन्दे पेशे का जो अन्तर्द्वन्द्व चलता है उसे नागर जी ने बड़ी की कुशलता से प्रस्तुत किया है। निर्गुनियाँ और मोहना के मध्य का प्रेम कभी–कभी इतना प्रगाढ़ दिखता है तो कभी–कभी वह मोहना के द्वारा अपमानित भी होती है। मोहना की माँ के द्वारा वह अत्यधिक अपमानित होती है। मोहना की माँ के कर्कश भरे अपशब्द से निर्गुनियाँ का व्यक्तित्व आहत हो उठता है। उपन्यास की सारी कथा साक्षात्कार एवं डायरी शैली के माध्यम से आगे बढ़ती है। नागर जी की यह प्रयोग पद्धति निःसंदेह नवीन है व आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास की विशेषता पर प्रकाश डालती है।

निर्गुनियाँ के कई रूप पाठकों के सम्मुख आते हैं। निर्गुण का एक रूप जिसमें वह काम की भूख से पीड़ित है व पतित है, वही निर्गुण एक वृद्ध भंगी के घर में मैला ढोने का

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

कार्य भी करती है, आर्य समाज में भी जाती है, बच्चों के पालन–पोषण, पाठशाला चलाना और अपने डाकू प्रेमी के प्रेम में डूबना ये सब निर्गुण के अनेक गुण है। तत्पश्चात काम–वासना के दलदल से निकलकर स्वच्छ और पवित्र जीवन की कामना करती है। नागर जी ने निर्गुनियाँ के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है, ''इस स्त्री की माशूम मिजाजी, तेजस्विता, वाकपटुता, इसका एरिस्ट्रोक्रेटिक अंदाज सिमटकर एक तस्वीर बन गया और इस तस्वीर में कल्पना ने उसकी कमर पर टोकरा भी रख दिया।''8

निर्गुनियाँ में स्त्री जीवन की पीड़ा, दुश्वारियां, विवशता व संघर्ष के साथ–साथ जो चीज सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है, वह है जीवन के प्रति जीने की चाह। निर्गुनियाँ में जीवन के अदम्य लालसा है जो उसे समाज में खड़ा करती है। उसे आशावादी बनाती है। मोहना की मृत्यु के बाद निर्गुण हिम्मत नहीं हारती, वह अपने दोनों बच्चों को कठोर परिश्रम से पढ़ाती है। दोनों बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर आसीन हो जाते हैं। निर्गुनियाँ एक भारतीय स्त्री के समान अपने पति को कभी भी भुला नहीं पाती है और अपने कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वहन प्रेम पूर्वक करती है क्योंकि उसमें साहस है समाज से लड़ने की हिम्मत है। 'निर्गुनियाँ ने हिम्मत व संघर्ष के साथ मेहतर समाज में शिक्षा–प्रसार करने का काम किया। शहर के मेहतरों में शिक्षा की लगन जगाई, धन्धों और बाजे बजाने का काम अधिकाधिक फैलाने और उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिये उन्होंने कुछ वर्षों तक खूब ही लगन से काम किया था ..... लोग कहते हैं कि राम जी दया से जैसे उनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें।''9

निष्कर्षतः नागर जी का यह उपन्यास दलितों की समस्या को विस्तृत धरातल पर प्रस्तुत करता है। इसमें उन्होंने सदियों से अत्याचारित वर्ग की पीड़ा को साकार किया है। समाज के जुल्मों से त्रस्त दलित जाति की मुक्ति के लिये आवाज उठाई है। इस उपन्यास में उनका मुख्य उद्देश्य दलित मेहतर जाति को उनके घृणित कार्य (मैला ढोना) से मुक्त करवाना है। ''प्रेम, राग सामाजिक रूढ़ियों, नारी–पुरूष सम्बन्ध, पीढ़े भेद जैसे महानगरीय सभ्यता से पुरस्कार स्वरूप मिले हुये यथार्थ के अंकन की भूल–भुलैया में भटकने वाले आधुनिक साहित्यकारों क लिये यह औपन्यासिक यथार्थ मार्गदर्शन का एक द्वीप स्तम्भ है।''10

कथानक एवं भाषा शैली की दृष्टि से भी यह उपन्यास आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नवीन तथा जीवंत है। ममता कालिया के शब्दों में, ''इस उपन्यास की भाषा जिंदगी से लबरेज, संघर्ष से रगड़ा खाती हुई भाषा है। निहायत बोलचाल का अंदाज, ठेठ घरेलू शब्द प्रयोग नागर जी की विशेषता है। मेहतरों की जिंदगी का पूरा प्रामाणिक तापमान उनका गाली–गलौज, रीति–रिवाज, रहन–सहन और धौल–घप्पे का माहौल इस रचना में पारे सा उतर आया है।''11 अतः समाज में क्रांति लाने वाली यह रचना सभी दृष्टियों से सफल है एवं आधुनिकता के संदर्भ में इस उपन्यास का महत्व व योगदान है।

– 0 –

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

सन्दर्भ–सूची

1. अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत – डा0 सुदेश बत्रा, पृ0–53

2. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता – डॉ0 अनीता रावत, पृ0–175

3. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता – डॉ0 अनीता रावत, पृ0–175

4. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता – डॉ0 अनीता रावत, पृ0–176

5. अमृतलाल नागर की कथा दृष्टि के समाजशास्त्रीय आयाम – डॉ0 सरोज सिंह, पृ0–65

6. नाच्यौ बहुत गोपाल – अमृतलाल नागर, पृ0–63

7. नाच्यौ बहुत गोपाल – अमृतलाल नागर, पृ0–69

8. नाच्यौ बहुत गोपाल – अमृतलाल नागर, पृ0–28

9. नाच्यौ बहुत गोपाल – अमृतलाल नागर, पृ0–10

10. अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत – डा0 सुदेश बत्रा, पृ0–356

11. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता – डॉ0 अनीता रावत, पृ0–179

एसोसिएट प्रोफेसर – हिन्दी
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
ज्ञानपुर, भदोही (उ0प्र0)
मोबाइल नं0: 9450605166
ई0मेल : dr.savita_sri@yahoo.com

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)